



Neutral Citation No. - 2026:AHC:34447-DB

आदेश सुरक्षित :- 04.02.2026

आदेश पारित :- 17.02.2026

**इलाहाबाद उच्च न्यायालय**

आपराधिक अपील संख्या - 2769 वर्ष 1983

चुन्नू उर्फ जाबिर

.....अपीलकर्ता(गण)

बनाम

उत्तर प्रदेश राज्य

.....प्रत्यर्थी(गण)

---

अपीलकर्ता(गण) के अधिवक्ता : ए.के. सिंह सोलंकी, अपुल मिश्रा, देवव्रत मिश्रा, पंकज

सत्संगी, एस. बनर्जी

प्रत्यर्थी(गण) के अधिवक्ता : डीजीए

---

**न्यायालय संख्या - 46**

**माननीय न्यायमूर्ति सिद्धार्थ,**

**माननीय न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय,**

**(न्यायमूर्ति सिद्धार्थ द्वारा प्रदत्त)**

1. श्री अपुल मिश्रा, विद्वान वरिष्ठ अधिवक्ता, जिनकी सहायता श्री देवव्रत मिश्रा, अपीलकर्ता संख्या 2 के विद्वान अधिवक्ता ने किया, और राज्य की ओर से श्री प्रेम शंकर प्रसाद, विद्वान ए.जी.ए. की दलीलें सुनीं; तथा अभिलेख पर मौजूद सामग्री और विचारण न्यायालय के निर्णय का अवलोकन किया।

2. यह वर्तमान आपराधिक अपील, अपर सत्र न्यायाधीश, बदायूं द्वारा सत्र विचारण संख्या 380/1981 में दिनांक 11.11.1983 को पारित निर्णय और आदेश के विरुद्ध दायर की गई है। इस निर्णय में अपीलकर्ताओं को भारतीय दंड संहिता की धारा 302/34 के तहत आजीवन कारावास और धारा

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



323/34 के तहत प्रत्येक अपीलकर्ता को छह माह के कठोर कारावास की सज़ा सुनाई गई है। सभी सज़ाओं को एक साथ चलने का निर्देश दिया गया है।

3. अभियोजन पक्ष की कहानी यह है कि दिनांक 08.03.1980 को रात लगभग 10:00 बजे, ग्राम बेहटा डंबर नगर के निकट स्थित ट्यूबवेल संख्या 134 के ट्यूबवेल ऑपरेटर, कमर रज़ा खान (अभि0सा0-4) ने मंगली, बुद्धू और अन्य लोगों को उनके खेतों की सिंचाई के लिए ट्यूबवेल से पानी दिया। मंगली और उसका भाई शमशाद खेत पर काम कर रहे थे, जबकि मृतक बुद्धू ट्यूबवेल पर मौजूद रहकर पानी के बहाव की देखरेख कर रहा था। उसी रात (8/9.03.1980 की दरमियानी रात) लगभग 04:00 बजे, अभियुक्त - सूबेदार उर्फ जाबिर, साबिर खान और डिप्टी खान - ट्यूबवेल पर पहुँचे। उन्होंने ट्यूबवेल के पानी का रुख अपने खेत की ओर मोड़ दिया, जिस पर बुद्धू ने आपत्ति जताई; इस पर अभियुक्तगण ने लाठियों से उस पर प्रहार करना शुरू कर दिया। बुद्धू ने शोर मचाया, जिसे सुनकर मंगली और शमशाद भी वहाँ पहुँच गए और बीच-बचाव करने लगे। बुद्धू भी आत्मरक्षा में लाठी चला रहा था, और जब मंगली तथा शमशाद ने हस्तक्षेप किया, तो उन्हें भी लाठियों से पीटा गया। बाबू और हशमत भी वहाँ पहुँच गए थे, जिन्होंने इस घटना को अपनी आँखों से देखा; उनके हस्तक्षेप करने पर अभियुक्त वहाँ से चले गए। बुद्धू गंभीर रूप से घायल हो गया था और ट्यूबवेल के पास ही ज़मीन पर गिर पड़ा था। पूछताछ करने पर, बुद्धू, शमशाद और मंगली ने बताया कि अभियुक्त अपने खेत की ओर पानी मोड़ने आए थे, और जब उन्होंने उन्हें ऐसा करने से रोका, तो उन्होंने लाठियों से उनकी पिटाई की।

4. एक बैलगाड़ी का इंतज़ाम किया गया और बुद्धू को उस बैलगाड़ी में बिठाकर, मंगली, शमशाद और बाबू उसे सुबह लगभग 10:00 बजे पुलिस स्टेशन ले गए। वे 09.03.1980 को दोपहर लगभग 2:30 बजे पुलिस स्टेशन पहुँचे और मंगली ने एफ.आई.आर. (प्रदर्श क-1) दर्ज कराई, जिसे हेड कान्सटेबल महेंद्र पाल सिंह ने लिखा था; उन्होंने जी.डी. (प्रदर्श क-21) में प्रविष्टियाँ कीं और हत्या का मामला दर्ज किया। इन लोगों के पुलिस स्टेशन पहुँचने से पहले ही, बुद्धू की रास्ते में-चौडैरा और नूरपुर गाँवों के बीच-मृत्यु हो चुकी थी।

5. उपनिरीक्षक रघुनाथ सिंह वर्मा (अभि0सा0-5) को विवेचना का काम सौंपा गया। वाद उनकी मौजूदगी में दर्ज किया गया और विवेचक ने हेड कान्सटेबल महेंद्र पाल सिंह का बयान अभिलेख किया। बुद्धू की लाश पुलिस स्टेशन के सामने एक बैलगाड़ी में पड़ी थी। विवेचना अधिकारी ने

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



लाश देखी, लाश का पंचनामा किया और गवाहों की मौजूदगी में पंचनामा रिपोर्ट प्रदर्श क-5 तैयार की। उन्होंने नाश प्रदर्श-का-6, चालान नाश प्रदर्श क-7, प्रतिसार निरीक्षक को एक चिट्ठी प्रदर्श-क-8, मुख्य चिकित्सा अधिकारी को एक चिट्ठी प्रदर्श-क-14 भी तैयार की और सादी मिट्टी प्रदर्श-क-9 तैयार करके लाश को कपड़े में सील करवा दिया। लाश कांस्टेबल सुरेश चंद और सोहन पाल को सौंप दी गई, जिन्हें लाश को पोस्टमार्टम के लिए ज़िला हेड क्वार्टर तक ले जाने का निर्देश दिया गया। विवेचक ने पुलिस स्टेशन पर मंगली, शमशाद, बाबू और हशमत अली के बयान अभिलेख किए और उसी दिन रात करीब 9 या 9:30 बजे वह घटनास्थल पर पहुँचे, लेकिन रात होने की वजह से कुछ नहीं कर पाए। रात के दौरान, विवेचक अभियुक्तगण की तलाश कर रहे थे, जो नहीं मिले। अगली सुबह उन्होंने घटनास्थल का मुआयना किया और नक्शा-नज़री प्रदर्श-क-10 तैयार किया। उन्होंने अभियुक्तगण की भी तलाश की, लेकिन वे नहीं मिले। ट्यूबवेल ऑपरेटर की भी तलाश की गई, लेकिन वह भी नहीं मिला। 12-03-1980 को अभियुक्तगण की तलाश की गई, लेकिन वे नहीं मिले, इसलिए विवेचक ने दोषियों की हाज़िरी सुनिश्चित करने के लिए दं.प्र.सं. की धारा 82/83 के तहत प्रक्रियाएँ हासिल कीं। अभियुक्तगण ने 15-3-1980 को कोर्ट में सरेंडर कर दिया। 24-3-1980 को विवेचक ने उनसे पूछताछ की और 20-3-80 को ट्यूबवेल ऑपरेटर कमर रज़ा का बयान अभिलेख किया गया। विवेचक ने 24-3-1980 को अभियुक्तों के विरुद्ध आरोप-पत्र प्रस्तुत किया।

6. घायल व्यक्तियों मंगली और शमशाद को हेड कान्सटेबल के साथ, क़दरचौक भेजा गया, जहाँ 09.03.1980 को सायं 05:00 बजे डॉ. एस.के. सक्सेना द्वारा उनकी चिकित्सकीय विवेचना की गई। चिकित्सा अधिकारी को शमशाद के शरीर पर निम्नलिखित चोटें मिलीं:-

- i. दाईं भौंह के पीछे और दाईं ऊपरी बांह के ऊपरी तीसरे हिस्से पर 5 से.मी. x 4 से.मी. का खरोंच वाला नीलगू निशान ।
- ii. बाईं ओर पीठ पर, बाईं इलियक स्पाइन से 6 से.मी. ऊपर 8 से.मी. x 2 से.मी. का नीलगू निशान।
- iii. दाईं जांघ के बीच के तीसरे हिस्से के सामने की बाहरी तरफ 10 से.मी. x 1.5 से.मी. का नीलगू निशान ।

7. डॉक्टर ने चोट की रिपोर्ट प्रदर्श-का-19 तैयार की। उन्होंने मंगली की भी जांच की और उसकी बाईं कलाई के पिछले हिस्से पर 4 से.मी. x 2 से.मी. का एक घाव पाया। मेडिकल ऑफिसर के

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



अनुसार, इन दोनों व्यक्तियों की चोटें साधारण थीं और संभवतः 09.03.1980 को सुबह लगभग 04:00 बजे, लाठी जैसे किसी भोथरे हथियार से लगी हो सकती हैं।

8. शव परीक्षण डॉ. वी.पी. कुलश्रेष्ठ (अभि0सा0-3) द्वारा 10.03.1980 को सुबह 11:00 बजे किया गया। उन्होंने शव पर निम्नलिखित चोटें पाईं:-

i. दाईं भौंह पर 1 से.मी. x 0.5 से.मी. का फटा हुआ घाव, जो हड्डी तक गहरा था।

ii. खोपड़ी के बाईं ओर के पिछले हिस्से पर 4 से.मी. x 1 से.मी. का नीलगू निशान जो खोपड़ी के बाईं ओर के पार्श्व हिस्से तक फैला हुआ था।

9. ऊपर बताई गई चोटों के अलावा, मेडिकल ऑफिसर ने यह भी पाया कि बाईं ओर की पैराइटल हड्डी में एक क्रैक फ्रैक्चर था, जो बाईं ओर के ऑक्सीपिटल क्षेत्र तक फैला हुआ था, और चोट सं. 2 के नीचे खून का थक्का मौजूद था; झिल्लियाँ सूजी हुई थीं और खून का थक्का मौजूद था; दिमाग भी सूजा हुआ था और खोपड़ी के बाईं ओर रक्तस्राव मौजूद था। प्लूरा और फेफड़े सूजे हुए थे, पेट खाली था, छोटी आंत में तरल पदार्थ और गैसें थीं, और बड़ी आंत तरल पदार्थ और मल से भरी हुई थी; तिल्ली और गुर्दे सूजे हुए थे और मूत्राशय भरा हुआ था। मेडिकल ऑफिसर के अनुसार, मौत का कारण सदमा और रक्तस्राव था, जो मृत्यु-पूर्व के परिणामस्वरूप हुआ था। मेडिकल ऑफिसर ने शव से एक कमीज़ और एक तहमत उतारी और उन्हें एक बंडल में सील कर दिया, जिसे शव के साथ आए कांस्टेबलों को सौंप दिया गया। मेडिकल ऑफिसर ने पोस्टमार्टम जांच रिपोर्ट प्रदर्श-क 2 भी तैयार किया।

10. बचाव पक्ष में, अभियुक्तों ने एक विपरीत पक्ष प्रस्तुत किया है। उनके अनुसार, चुन्ना खान और डिप्टी खान 8/9-3-1980 की रात को 1:00 बजे से खेत की सिंचाई कर रहे थे। उस रात लगभग 1:00 बजे बिजली आई थी, और ट्यूबवेल ऑपरेटर, कमर रज़ा ने उन्हें लगभग 04:00 बजे पानी दिया था; जब अभियुक्तों का खेत पूरी तरह से सिंचित नहीं हुआ था, तभी मंगली, शमशाद, बुद्धू, शफ़ात अली और लुफ़्टी अली वहाँ पहुँचे और पानी को अपने खेत की ओर मोड़ दिया। शफ़ात अली और लुफ़्टी अली के आदेश पर, मंगली, शमशाद और बुद्धू ने चुन्ना और डिप्टी खान को लाठियों से पीटा, और आत्मरक्षा में उन्होंने भी लाठियाँ चलाई। डिप्टी खान और चुन्ना खान की एफ.आई.आर. पुलिस स्टेशन में दर्ज नहीं की गई थी, जिसके बाद उन्होंने एक आपराधिक शिकायत दर्ज की। इस

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



संबंध में एक और एस.टी. सं. 381 of 1981 भी लंबित है और इस एस.टी. सं. 380/81 के साथ ही चल रही है।

11. अपने मामले को साबित करने के लिए, अभियोजन पक्ष ने मंगली और बाबू से पूछताछ किया, जिन्होंने घटना के बारे में बयान दिया और बचाव पक्ष के विपरीत बयान को नकार दिया। फिर अभियोजन पक्ष ने डॉ. वी.पी. कुलश्रेष्ठ (अभि० सा० 3) से पूछताछ की, जिन्होंने पोस्टमार्टम जांच के बारे में बयान दिया और अपनी रिपोर्ट प्रदर्श-क-2 को साबित किया। उमर रज़ा (अभि० सा० 4), जो एक ट्यूबवेल ऑपरेटर थे, से भी पूछताछ की गई; उन्होंने भी बचाव पक्ष के बयान का समर्थन किया और विरोधी गवाह बन गए। फिर अभियोजन पक्ष ने उपनिरीक्षक रघुनाथ सिंह वर्मा (अभि० सा० 5) से पूछताछ की, जिन्होंने विवेचना के बारे में बयान दिया। श्री जसवीर सिंह, जूनियर इंजीनियर (अभि० सा० 6), जो हाइड्रल विभाग से थे, ने अभियोजन पक्ष के बयान का समर्थन किया और उस समय के बारे में बयान दिया जब 08.03.1980 और 09.03.1980 को बिजली चल रही थी। फिर अभियोजन पक्ष ने डॉ. एस.के. सक्सेना से पूछताछ की, जिन्होंने मंगली और शमशाद की चोटों के बारे में बयान दिया और उनकी चोट रिपोर्टों को साबित किया। अंत में, अभियोजन पक्ष ने हेड कान्सटेबल महेंद्रपाल सिंह से पूछताछ की, जिन्होंने एफ.आई.आर. और जी.डी. में दर्ज प्रविष्टियों को साबित किया, और श्री उदयवीर सिंह त्यागी से सी.डब्ल्यू. 1 के रूप में पूछताछ की गई।

12. बचाव पक्ष की ओर से, बिशन दयाल, जो ट्यूबवेल विभाग, बदायूं में मुहरीर ज़िलेदार थे, से डी.डब्ल्यू.-4 के रूप में पूछताछ की गई। वह ट्यूबवेल के रजिस्टर लेकर आए ताकि यह दिखाया जा सके कि 8/9-3-1980 की रात को इन ट्यूबवेलों को किस समय बिजली मिली थी।

13. इस अपील के लंबित रहने के दौरान, अपीलकर्ता संख्या 1, चुन्नू उर्फ जाबिर, की मृत्यु हो गई है और दिनांक 06.10.2025 के आदेश के अनुसार, उनके विरुद्ध अपील को उपशमित मानकर खारिज कर दिया गया है। अतः, अपील की सुनवाई केवल अपीलकर्ता संख्या 2, अर्थात् सूबेदार खान के पुत्र डिप्टी खान की ओर से की गई है।

14. अपीलकर्ता संख्या 2 के विद्वान अधिवक्ता ने यह दलील दी है कि सही तथ्य यह हैं कि 08.03.1980 की रात लगभग 10:00 बजे, ट्यूबवेल ऑपरेटर ने शिकायतकर्ता के खेत की सिंचाई करने के लिए उस इलाके का ट्यूबवेल चालू किया। ट्यूबवेल से पानी 09.03.1980 को सुबह 04:00 बजे तक बहता रहा; 09.03.1980 को सुबह 04:00 बजे, कथित तौर पर अभियुक्त लाठियों से लैस

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



होकर ट्यूबवेल पर आए और मृतक से कहा कि अब से ट्यूबवेल का पानी अभियुक्तों के खेतों की ओर बहेगा, और उन्होंने ज़बरदस्ती पानी का बहाव अपने खेतों की ओर मोड़ दिया; मृतक ने पानी के बहाव की दिशा बदलने के लिए अभियुक्तों का विरोध किया; इस पर अभियुक्तों ने लाठियों से मृतक पर हमला करना शुरू कर दिया; मृतक के शोर मचाने पर शिकायतकर्ता और उसके अन्य घायल भाई उसे बचाने के लिए आए, लेकिन अभियुक्तों ने उन्हें भी पीटा; मृतक को अस्पताल ले जाते समय रास्ते में ही उसकी मृत्यु हो गई।

15. अपीलकर्ता के विद्वान अधिवक्ता ने यह दलील दी है कि वास्तव में अभियुक्तों ने आत्मरक्षा में कार्य किया था; इस घटना में अभियोजन पक्ष के लोग ही असली हमलावर थे, न कि अपीलकर्ता पक्ष, जिन्हें भी चोटें आई थीं, लेकिन यह साबित नहीं हो सका; मृतक अपीलकर्ता संख्या 1, चुन्नू खान ने, दं.प्र.सं. की धारा 313 के तहत दर्ज अपने बयान में निजी बचाव (आत्मरक्षा) का तर्क प्रस्तुत किया था, जिसकी पुष्टि अपीलकर्ता संख्या 2 ने भी दं.प्र.सं. की धारा 313 के तहत दर्ज अपने बयान में की थी; अभि0सा0-4, कमर रज़ा खान (ट्यूबवेल ऑपरेटर), ने बचाव पक्ष का समर्थन किया; मृतक के सिर पर केवल एक ही वार लगा था, जो उसकी जान के लिए घातक साबित हुआ; घायल हुए दो अन्य व्यक्तियों को केवल साधारण चोटें आई थीं; मृतक को लगी एकमात्र घातक चोट का असली कर्ता (हमलावर) कौन था, यह स्पष्ट नहीं हो सका, इसलिए हत्या का अपराध करने के लिए भा.दं.सं. की धारा 34 की सहायता से अपीलकर्ता संख्या 2 को दोषी ठहराना न्यायसंगत नहीं है।

16. विद्वान ए.जी.ए. ने अपीलकर्ता संख्या 2 की ओर से अधिवक्ता द्वारा दी गई दलीलों का ज़ोरदार विरोध किया है और कहा है कि अपीलकर्ताओं द्वारा निजी बचाव की जो दलील दी गई थी, वह विचारण न्यायालय के सामने साबित नहीं हो पाई। उन्होंने कहा कि अपीलकर्ताओं को कोई ऐसी चोट नहीं लगी थी जिससे यह साबित हो सके कि उन पर पहले अभियोजन पक्ष की ओर से हमला किया गया था और फिर उन्होंने अपने निजी बचाव के अधिकार का इस्तेमाल किया, और उन पर हुए हमले का विरोध करते हुए बुद्धू की मौत हो गई। शमशाद और मंगली को मामूली चोटें आई थीं। उन्होंने यह भी बताया कि विचारण न्यायालय ने अपीलकर्ताओं को दोषी ठहराया और सी.डब्ल्यू.-1 तथा अभियोजन पक्ष के अन्य गवाहों के बयानों पर भरोसा किया। वह क्रॉस केस के नतीजे के बारे में जानकारी नहीं दे पाए, लेकिन उन्होंने माना कि शिकायत के रूप में एक क्रॉस केस दायर किया गया था, जिसका फैसला इस केस के साथ नहीं किया गया, जैसा कि अभि0सा0-1 ने स्वीकार किया है।

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



17. दोनों पक्षों की दलीलें सुनने के बाद, हमने पाया कि अपीलकर्ताओं द्वारा निजी बचाव की जो दलील दी गई थी, वह विचारण न्यायालय के सामने साबित नहीं हो पाई और विचारण न्यायालय का यह निष्कर्ष कि हमलावर अपीलकर्ताओं का पक्ष था, सही है, क्योंकि यह अभिलेख पर मौजूद सामग्री पर आधारित है। विचारण न्यायालय के निष्कर्षों की पुष्टि की जाती है। हालाँकि, हमने अभिलेख से पाया कि मृतक को सिर के पिछले हिस्से में केवल एक जानलेवा चोट लगी थी, जो खोपड़ी के ऊपरी हिस्से तक फैली हुई थी और उसके जीवन के लिए घातक साबित हुई। उसे लगी दूसरी चोट केवल 1 सेमी x 0.5 सेमी का एक गहरा घाव था, जो दाहिनी आँख की भौंह पर हड्डी तक गहरा था।

18. एफ.आई.आर. में चार हमलावर थे, जिनमें से दो, यानी साबिर खान और सूबेदार खान को विचारण न्यायालय ने संदेह का लाभ दिया, लेकिन मृतक, अपीलकर्ता संख्या 1 (चुन्नू उर्फ जाबिर) और जीवित अपीलकर्ता संख्या 2 (डिप्टी खान) को भा.दं.सं. की धारा 302 के साथ धारा 34 के तहत दोषी ठहराया गया है और सज़ा सुनाई गई है।

19. हमने अभिलेख से पाया कि वर्ष 1983 में जब अपीलकर्ता संख्या 2 का बयान दर्ज किया गया था, तब उसकी उम्र लगभग 18 वर्ष थी। प्रश्नगत घटना वर्ष 1980 में हुई थी, और इसलिए, घटना के समय अपीलकर्ता संख्या 2 की आयु लगभग 15 वर्ष रही होगी और वह नाबालिग था। उसकी नाबालिग होने की दलील न तो विचारण न्यायालय के सामने कभी उठाई गई और न ही इस कोर्ट के सामने। इस विलंबित चरण पर, और इस अपील में हमारे द्वारा पारित किए जाने वाले आदेश को ध्यान में रखते हुए, संबंधित जुवेनाइल जस्टिस बोर्ड द्वारा अपीलकर्ता संख्या 2 की आयु के संबंध में जांच का निर्देश देने से कोई सार्थक उद्देश्य पूरा नहीं होगा; यह जांच 'किशोर न्याय (बच्चों की देखभाल और संरक्षण) अधिनियम, 2015' के तहत की जाती, जो अब लागू है। प्रश्नगत घटना के समय अपीलकर्ता संख्या 2 की आयु को ध्यान में रखते हुए, उसे दी गई आजीवन कारावास की सज़ा को उचित नहीं ठहराया जा सकता।

20. हमें अपीलकर्ता सं. 1 या मृतक-अपीलकर्ता सं. 2 (जो अब जीवित नहीं है) में से किसी को भी कोई खास भूमिका सौंपी गई नहीं मिली। हमने आगे पाया कि पक्षों के बीच विवाद अचानक उनके खेतों में पानी के बहाव के मोड़ने के कारण हुआ। उनके बीच किसी भी पहले से सोचे-समझे मकसद

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”



या दुश्मनी का कोई सबूत नहीं है। इसलिए, अपीलकर्ता सं. 2 की ओर से मृतक की मौत का कारण बनने का कोई पूर्व-नियोजित इरादा या मंशा नहीं दिखाई देती है।

21. इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कि मृतक को अपीलकर्ताओं में से किसी एक (या शायद बरी किए गए अभियुक्त) द्वारा केवल एक जानलेवा चोट पहुंचाई गई थी, और माननीय सर्वोच्च न्यायालय द्वारा चमारू बुधवा बनाम मध्य प्रदेश राज्य (एआईआर 1954 एससी 652) वाद में निर्धारित सिद्धांत पर भरोसा करते हुए—जिसमें यह अभिनिर्धारित किया गया था कि बिना किसी पूर्व-नियोजन के, अचानक हुई लड़ाई में, आवेश में आकर, और बिना किसी अनुचित लाभ उठाए किया गया अपराध, भा.दं.सं. की धारा 300 के अपवाद 4 के अंतर्गत आता है। हम पाते हैं कि अभियोजन पक्ष उचित संदेह से परे यह साबित करने में असमर्थ रहा है कि अपीलकर्ता का कृत्य मृत्यु कारित करने के इरादे से किया गया था, हालांकि उसे इस बात का ज्ञान था कि इसका परिणाम मृत्यु हो सकता है। अभियोजन पक्ष यह साबित करने में सफल रहा है कि यह अपराध, अधिक से अधिक, भा.दं.सं. की धारा 304 भाग II/34 के अंतर्गत आता है।

22. परिणामस्वरूप, अपीलकर्ता सं. 2 की भा.दं.सं. की धारा 302 के तहत दोषसिद्धि को संशोधित करके भा.दं.सं. की धारा 304 भाग II/34 के तहत दोषसिद्धि में बदल दिया जाता है। सजा को भी संशोधित करके तीन वर्ष के कारावास और 10,000/- रुपये के जुर्माने में बदल दिया जाता है; यह जुर्माना सूचनादाता या उसके विधिक वारिसों को, जैसा भी मामला हो, देय होगा।

23. अपीलकर्ता जमानत पर है। उसका जमानत बंधपत्र रद्द किया जाता है और उसके प्रतिभू उन्मोचित किए जाते हैं। वह तत्काल आत्मसमर्पण करे और अपनी शेष सजा पूरी करे। सजा की वह अवधि, जो वह पहले ही काट चुका है, उसे इसमें समायोजित किया जाएगा।

24. अपील को उपरोक्त अनुसार आंशिक रूप से स्वीकार किया जाता है।

25. आवश्यक अनुपालन हेतु, इस निर्णय की प्रति के साथ विचारण न्यायालय का अभिलेख वापस भेजा जाए।

17 फरवरी, 2026

अभिषेक

(न्यायमूर्ति जय कृष्ण उपाध्याय) (न्यायमूर्ति सिद्धार्थ)

“अस्वीकरण: अनुवादित निर्णय वादी के समझने हेतु है और इसका किसी अन्य उद्देश्य के लिए प्रयोग नहीं किया जा सकता है। सभी कानूनी और सरकारी उद्देश्यों के लिए, निर्णय का मूल संस्करण ही मान्य होगा।”